हिन्दी

उत्तरतालिका

खंड 'अ' (वस्तुपरक प्रश्न) (40 अंक)

उ.1 (i) (स) संघर्ष : सफलता का आधार

(ii) (द) समस्या समाधान की प्रेरणा से

(iii) (स) जीवन में समस्याएँ तो होती हैं, उन्हें स्वीकार करना चाहिए।

(iv) (ब) प्रेरणापरक

(v) (स) संघर्ष पथ पर विजय पाने की

उ.2 (i) (अ) हँसी-एक वरदान

(ii) (स) हँसी मन के आनंद को बाहर प्रकट करती है

(iii) (द) वह शोक और दुःख दूर करता है।

(iv) (द) इत

(v) (ब) आनंद के उपाय सुझाता है

(व्यावहारिक व्याकरण)

उ.3 (i) (द) सर्वनाम पदबंध

(ii) (अ) विशेषण पदबंध

(iii) (स) संज्ञा पदबंध

(iv) (द) क्रिया विशेषण पदबंध

(v) (स) क्रिया पदबंध

उ.4 (i) (अ)बाहर बेढब-से मिट्टी के एक बर्तन में पानी भरा हुआ था।

(ii) (स) जब वह मंत्री बन गया है तब भी उसका व्यवहार पूर्ववत है।

(iii) (स) मिश्र वाक्य

(iv) (स) मिश्र वाक्य

(v) (ब) संयुक्त वाक्य

उ.5 (i) (अ) चंद्रशेखर

(ii) (ब) द्वंद्व समास

(iii) (ब) अव्ययीभाव समास

(iv) (अ) अधिकरण तत्पुरूष

(v) (ब) संप्रदान तत्पुरूष

उ.6 (i) (स) आस्तीन का साँप

(ii) (स) प्रतीक्षा करना

(iii) (ब) कलेजा ठंडा होना

(iv) (ब) दृढ़ विचार

(v) (स) निरूत्तर होना

(vi) (अ) ईद का चाँद होना

उ.7 1. (अ) मानो ये झरने पर्वत की महानता का गुणगाान कर रहे हैं

2. (स) मोती की लड़ियों के समान सुंदर प्रतीत हो रहे हैं

3. (द) झरने के स्वर को सुनकर दर्शकों की नस-नस में उत्तेजना व मस्ती भर जाती है।

4. (अ) मन में उठने वाली उच्च आकांक्षाओं के समान

5. (ब) उपमा अलंकार

उ.8 (i) (द) उदार व्यक्ति को जनकर धरती स्वयं को धन्य मानती है

(ii) (स) एक न एक दिन अत्याचारी को अपना अत्याचार बंद करना पड़ता है।

उ.9 1. (द) अभिनय की दृष्टि से

2. (ब) राज कपूर

3. (स) जागते रहो

4. (द) (1) और (2) दोनों

5. (ब) एशिया के सबसे बड़े शोमैन के रूप में

उ.10 (i) (द) शांति की विशेष व्यवस्था होना

(ii) (द) समुद्र के किनारे बिल्डरों द्वारा नई इमारतों का निर्माण करना

खंड 'ब' (वर्णनात्मक प्रश्न) (40 अंक)

उ.11 (i) यद्यपि डाँट डपट से छोटे भाई का आत्म विश्वास कम हुआ और परीक्षा के लिए उसने विशेष परिश्रम नहीं किया था परन्तु यदि बड़ा भाई अपने छोटे भाई पर इस प्रकार नियंत्रण नहीं रखता तो छोटा भाई बिल्कुल ही नहीं पढ़ता तब छोटा भाई इतने अच्छे अंको से उत्तीर्ण नहीं हो पाता। वह हर दर्जे में अव्वल नहीं आता। बडे भाई की डाँट के कारण ही वह थोडा बहुत पढ़ता था। इस प्रकार हम कह सकते है कि लेखक के अव्वल आने में बड़े भाई की डाँट-फटकार का ही सहयोग था।

(ii) आज का हिंदी सिनेमा बहुत-सी बातों में राज कपूर के सिनेमा वाले दौर से बदल गया है। नई तकनीकों के विकास ने फिल्मों का प्रदर्शन- कौशल एवं व्यवसाय तो बढ़ाया है, लेकिन राज कपूर के जमाने में बनने वाली फिल्मों के प्रमुख गुण, उद्देश्य एवं संदेश को आज की फिल्मों में कम जगह मिल रही है।

आज फिल्मों में मार्मिकता घटी है, सामान्य जीवन से उनका जुड़ाव कम हो गया है, फिल्मों में चमक-दमक बढ़ी है और अनुभूति का स्तर कम हो गया है। यही कारण कि जहाँ राज कपूर के दौर की फिल्में अपने प्रदर्शन के पश्चात् दर्शकों के दिलों' दिमाग पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ने में सक्षम थी, वही आज के दौर की फिल्में कुछ ही दिनों में दर्शकों की स्मृति से गायब हो जाती हैं। आज के जमाने में अभिनेता-अभिनेत्री फिल्मों को सिर्फ पैसा कमाने का व्यवसाय मानने लगे हैं, जबकि राज कपूर के समय में यह माध्यम एक कला-साधना के रूप में विकसित हुआ।

(iii) ईश्वर ने यह धरती सभी के लिए बनाई है, इस पर सभी का समान अधिकार हैं। पशु-पक्षी, मानव, नदी, पर्वत, समंदर सभी की बराबर की हिस्सेदारी है, परंतु मनुष्य ने बुद्धि के बल पर बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी है। परिवार के समान दिखाई देने वाले संसार को टुकड़ों में बाँट दिया है और विश्व को टुकड़ों में बाँट कर वह स्वयं को विजयी समझ रहा है, जबकि यही उसकी सबसे बड़ी हार है, क्योंकि जुड़े होने पर सभी एक-दूसरे की परवाह करते हैं, परन्तु अलग होने पर सभी अपने-अपने लिए सोचते हैं। यह सोच सबसे अधिक दु:खदायी होती है।

ऐसे में कोई किसी के दु:ख दर्द को न तो समझता है, न बाँटना चाहता है। संवदेनहीनता सीमा का अतिक्रमण कर चुकी है। प्रस्तुत पाठ इस तथ्य को स्पष्ट करने में पूर्णरूपेण सक्षम सिद्ध हुआ है। अत: कहा जा सकता है कि आज के युग में ऐसे लोग बहुत कम हैं, जो दूसरों के दु:ख से दु:खी होते हैं।

उ.12 (i) मनुष्य को मानव योनि में जन्म लेने का सौभाग्य अनेक योनियों में जन्म लेने के बाद ही प्राप्त होता है। इसलिए हमें अपने इस मानव जीवन को सार्थक बनाना चाहिए, जिससे अपनी मृत्यु के उपरांत भी हम अमर हो जाएँ और हमारे महान् कार्यों के कारण सब हमारा स्मरण करें। हमें सदैव लोक मंगलकारी, सर्वजन हितार्थ और परोपकारी कार्यों को करना चाहिए। मनुष्य को असहायों और बेसहारों का सहायक बनना चाहिए। निराश्रितों को आश्रय प्रदान करना और पीड़ित की पीड़ा दूर करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहना चाहिए। परोपकार ही मनुष्य को महान् बनाता है, इसलिए उदारता व परोपकार को अपना ध्येय बनाकर जीवन-पथ पर आगे बढ़ना चाहिए, तभी मानव जीवन सार्थक हो सकता है।

(ii) 'कर चले हम फिदा' गीत उर्दू के प्रसिद्ध शायर कैफ़ी आजमी की रचना हैं। इस गीत के माध्यम से कवि ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि भारतीय सैनिकों का जीवन वास्तव में बलिदान, संघर्ष, अनुशासन एवं सर्वस्व न्योछावर करने की भावना से ओत-प्रोत होता है। वे सीमा पर मिलने वाली विविध कठिन परिस्थितियों का सहर्ष सामना करते हैं। भरतीय सैनिक देश की रक्षा करते हुए कड़ाके की ठंड में भी पूर्ण हिम्मत और साहस से शत्रुओं का सामना करते हैं। वे अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक संघर्ष करते रहते हैं। देश की रक्षा में तत्पर भारतीय सैनिक साँस रूकने एवं धड़कने बंद होने तक अपने कदमों को रूकने नहीं देते। स्वयं का सर्वस्व त्याग करते हुए भी वह हिमालय (देश का गौरव) का मस्तक झुकने नहीं देते। इस प्रकार वह देश की रक्षा के मार्ग में आने वाली सभी कठिन परिस्थितियों को सहर्ष स्वीकार करते हुए देश के गौरव को बनाए रखते हैं।

प्रस्तुत गीत में कवि ने सैनिकों के माध्यम से देश के लिए अपने प्राणों को न्योछावर करने वाले लोगों की भावना को आलोकित किया है। देश की रक्षा में अपने प्राणों का उत्सर्ग करने वाला सैनिक ऐसी ही अपेक्षा आने वाली युवा पीढ़ियों से भी करता है। उसे देश के लिए 'मर-मिटना' अपने जीवन में सौंदर्य तथा प्यार की प्राप्ति से कहीं अधिक महत्वपूर्ण एवं अर्थपूर्ण लगता है। इसी में जीवन की सार्थकता है।

(iii) कवि की यह प्रार्थना, अन्य प्रार्थना गीतों से प्राय: अलग लगती है। सामान्यत: प्रार्थना गीतों में ईश्वर से दु:ख से मुक्ति की विनती होती है, सहायता की प्रार्थना होती है तथा संकटों से उबारने की व्याकुलता के साथ माँग होती है। ईश्वर को ही सब कुछ माना जाता है, माता-पिता, बंधु आदि सब कुछ। ऐसे प्रार्थना गीतों में आत्मविश्वास का अभाव होता है। 'आत्मत्राण' कविता में कवि ईश्वर की प्रार्थना किसी विपत्ति से उबरने के लिए नहीं करता, बल्कि विपदाओं में भयरहित संघर्षों की चेतना की चाह से करता है। कवि ईश्वर से सहायता नहीं चाहता, बल्कि वह पौरूष-बल चाहता है, जिसके माध्यम से हर संकट का सामना वह साहस एवं गंभीरतापूर्वक कर सके। कवि ईश्वर से स्वयं को तारने की माँग नहीं करता, बल्कि तैरने (संकट से बाहर निकलने) की क्षमता प्रदान करने की कामना करता है।

उ.13 (i) हरिहर काका पाठ पढ़कर स्पष्ट होता है कि आजकल हमारे रिश्तों की बुनियाद पैसा और धन-संपत्ति है, प्रेम और भाईचारा नहीं। हरिहर घर का बुजुर्ग है। इसलिए उसका सम्मान सबसे ऊपर होना चाहिए। परंतु घर की बहुएँ उसे फालतू का बोझ समझती हैं। वे उसे ठीक से भोजन भी नहीं देना चाहतीं। यहाँ तक कि उसके अपने भतीजे भी उचित सम्मान नहीं देते । उन सबकी नजर हरिहर के पैसे पर है, उसकी इज्जत पर नहीं। यही कारण है कि वे घर से ठाकुरबारी में शरण लिए हुए हरिहर को घर ले आते हैं और उसका मान-सम्मान करना शुरू कर देते हैं किंतु यह सम्मान झूठा है, नकली है। जल्दी ही वे भी उसकी संपत्ति हड़प लेना चाहते हैं।

दूसरी ओर ठाकुरबारी के लोग भी धर्म से नाता नहीं रखते । वे हरिहर की संपत्ति पर नजरें गढ़ाए बैठे हैं। गाँव के नेता भी उसकी संपत्ति को हड़पने के लिए चालें चलते हैं इससे स्पष्ट होता है कि आजकल सभी संबंधों में प्रमुख पैसा है, और कुछ नहीं।

(ii) बच्चों को स्कूल में होने वाली स्काउटिंग या परेड जैसी गतिविधियाँ बहुत आकृष्ट करती थीं। ऐसी गतिविधियों में उनका शरीर क्रियाशील रहता था। दूसरे स्काउटिंग में उन्हें रंग बिरंगी झंडियाँ भी मिलती थी। जब वे लहराती थीं तो उन्हें बहुत अच्छा लगता था। जब वे परेड के लिए धोबी से धुलवाई हुई नई ड्रेस पहनते थे और बूटों से खटखट करते हुए चलते थे तो खुद को कोई फौजी समझते थे। उस समय उन्हें बहुत अच्छा लगता था।

दूसरी ओर पुरानी किताबें पढ़ना, मास्टर के डर से जबरदस्ती पाठ याद करना, छुट्टियों का ढेर सारा काम करना आदि ऐसे काम थे जिनसे वे दूर भागते थे।

(iii) एक ही कक्षा में जब एक समझदार छात्र दो बार फेल हो जाता है तो उसके लिए बहुत ही अपमान की बात हो जाती हैं अन्य सारे बच्चे उसे अपमान की दृष्टि से देखने लगते हैं। वह मज़ाक का पात्र बन जाता है। यह स्वाभाविक है। स्वाभाविक इसलिए कि हर आदमी स्वयं को दूसरों से बड़ा और समझदार समझता हैं स्वयं को बड़ा सिद्ध करने के लिए सभी को अपने से एक तुच्छ आदमी की जरूरत होती है। जब भी ऐसा तुच्छ आदमी मिल जाता है तो हमें संतुष्टि हो जाती है। वास्तव में यह हमारे अंह की संतुष्टि होती है। इसके लिए हम अपनी इंसानियत को भी मार देते है। हमारी इंसानियत कहती है कि गिरे हुए आदमी से सहानुभूति से व्यवहार करो। हम करना भी चाहते है। यदि हमारा सगा दो बार फेल होता है तो हम अवश्य उससे सहानुभूति रखते। परन्तु पराया होने के कारण हम उससे सहानुभूति रखने की बजाय उसका मज़ाक उड़ाने लगते है। इससे हमारी इंसानियत में कमी प्रकट होती है।

उ.14 (i) **संकेत-बिंदु** – वैज्ञानिक उन्नति से लाभ और हानि, ग्लोबल वॉर्मिंग क्या है? मनुष्यों द्वारा प्रकृति से छेड़छाड़, समस्या, उपाय।

आज संपूर्ण विश्व के सम्मुख प्राकृतिक असंतुलन और पर्यावरण की समस्या विकराल रूप में उपस्थित है। जिस प्रकृति ने हमे शुद्ध जल, शुद्ध वायु और हरियाली दी है, हम अपने भौतिक सुख-साधनों के लिए उसे अनेक प्रकार से प्रदूषित कर रहे हैं। विज्ञान के माध्यम से हमने अनेक सुख-साधन तो जुटा लिए हैं, किंतु अपने चारों ओर फैले प्राकृतिक संसाधनों एवं पर्यावरण को हानि पहुँचा रहे हैं। जिसके कारण ग्लोबल वार्मिंग की समस्या बहुत विकराल रूप ले चुकी है। इस प्राकृतिक असंतुलन के कारण मनुष्य के अस्तित्व पर ही प्रश्न चिह्न लग गया है। ग्लोबल वार्मिंग क्या है? हमें पहले यह जान लेना चाहिए। भूमंडलीय वातावरण का औसत दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है, यही ग्लोबल वार्मिंग है। यह तापमान क्यों बढ़ रहा है तथा इससे क्या-क्या हानि हो सकती है? इस विषय पर पूरे विश्व के वैज्ञानिक शोध तथा विचार-विमर्श कर रहे हैं। वायुमंडल में प्राकृतिक क्रियाओं के फलस्वरूप गैसों का संतुलन बना रहता है; किंतु आज मनुष्य ने अपने कार्य-कलापों से वायुमंडल को असंतुलित कर दिया है। अंधाधुंध उद्योगों की स्थापना, उनकी चिमनियों से निकलने वाली गैसें, पर्यावरण में बढ़ता वायु प्रदूषण, वृक्षों की कटाई, गाड़ियों द्वारा छोड़ी गई विषाक्त गैसें आदि इस समस्या को और भी विकराल बना रही हैं। भूमंडलीय तापमान बढ़ने से हिम, नदियों और पहाड़ों की बर्फ तेजी से पिघल रही है। इससे महासागरों का जल स्तर बढ़ रहा है। मौसम चक्र में भी बदलाव आ रहा है। गरमी में अधिक गरमी तथा सरदी में अधिक सरदी पड़ रही है। बिना मौसम के बरसात तथा तूफान आ रहे हैं। इस विकराल समस्या से बचने के लिए हमें एकजुट होकर कार्य करना होगा। अधिक से अधिक वृक्ष लगाने होंगे जिससे वृक्ष कार्बन-डाई-ऑक्साइड लेकर ऑक्सीजन की मात्रा वायुमंडल में बढ़ा सकें। प्राकृतिक गैसों - सी.एन.जी. और सौर-ऊर्जा आदि से चलने वाले उपकरणों का प्रयोग अधिक करना होगा। धुआँ निकालने वाली मशीनों का प्रयोग बंद करना होगा। हम एकजुट होकर इस दिशा में कदम बढ़ाएँ। लोगों को जागरूक बनाएँ। उन्हें वैज्ञानिक आविष्कारों और प्राकृतिक संसाधनों के दुरुपयोग करने से रोंके तो इस संकट से बचा जा सकता है।

(ii) **संकेत-बिंदु** – बेरोजगारी की समस्या, बेरोजगारी के कारण, उपाय।

भारत एक विकासशील देश है। इस समय इसके सम्मुख अनेक समस्याएं हैं। उन समस्याओं में प्रमुख समस्या बेरोजगारी है। आज प्रमुख और विचारणीय प्रश्न यह है कि देश में बेरोजगारी की समस्या इतनी भयंकर क्यों हो गई है? इसका मुख्य कारण यह है कि देश में जितनी तेजी से आर्थिक विकास होना चाहिए, उतनी तेजी से नहीं हो रहा है। दूसरा कारण देश की जनसंख्या का बहुत तेजी से बढ़ना है। जिसके फलस्वरूप बेरोजगारी की संख्या में भी तेजी से इजाफा हो रहा है। देश को इस समस्या से मुक्ति दिलाने के लिए सही दिशा में प्रयास करने की जरूरत है। देश के नीति-निर्माताओं को नीतियाँ बनाते समय यह देखना चाहिए कि देश में बेरोजगारी की प्रकृति, स्वरूप और स्थिति कैसी है, बेरोजगारी की संख्या कितनी है तथा उन सभी के लिए किस प्रकार रोजगार की समुचित व्यवस्था की जाए। परंतु दुर्भाग्यवश हमारे नीति-निर्माता योजनाएँ बनाते समय इन बातों को महत्व नहीं देते। आजादी के बाद से अब तक विभिन्न पंचवर्षीय योजनाएँ बनती रहीं, लेकिन बेरोजगारी की निरंतर बढ़ती समस्याओं के समाधान के लिए कोई सार्थक पहल नही की गई। यदि हमारे योजनाकारों ने जनसंख्या की वृद्धि पर आरंभ से ही अंकुश लगाने की दिशा में प्रयास किये होते, तो स्थिति इतनी खराब नहीं होती। देश में जनसंख्या की वृद्धि के साथ-साथ बेरोजगारी की संख्या में भी निरंतर वृद्धि होती रही है। यद्यपि सरकार ने नये उद्योग धंधो की स्थापना की, परंतु उससे रोजगार के अधिक अवसरों का सृजन न हो सका। शिक्षा का विस्तार हुआ, परंतु योजनाएँ आवश्यकतानुसार नहीं बनीं और शिक्षित बेरोजगारों की कतार लंबी होती चली गई। शिक्षा के विकास का सीधा संबंध रोजगार से होना चाहिए। परंतु ऐसा न होने के कारण शिक्षित बेराजगारी की संख्या में अतिशय वृद्धि होती रही है। बेरोजगारी की समस्या के समाधान के लिए जनसंख्या की वृद्धि दर को नियंत्रित करने की आवश्कता है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय कृषि की उपज पर आधारित लघु उद्योगों की स्थापना की जानी चाहिए। बेरोजगारी की गंभीर समस्या के समाधान हेतु पूरे संकल्प के साथ सही दिशा में प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।

(iii) **संकेत-बिंदु** – पेड़-पौधे और मनुष्य का गहरा संबंध, पेड़-पौधों से प्राप्त वस्तुएँ, वनों की कटाई के कारण, समस्याएँ, प्रदूषण पर रोक।

हमारी प्रकृति ने हमें अनेक उपहार दिए हैं। इनमें वन एक अमूल्य उपहार है। इस अमूल्य संपदा का उचित प्रयोग करना, हम सभी के लिए बहुत आवश्यक है। पेड़-पौधों का मनुष्य से गहरा संबंध है। ये दोनों एक-दूसरे के पोषक तथा संरक्षक हैं। पेड़-पौधे हमें खाने के लिए भोजन, धूप से बचने के लिए छाया एवं अनेक प्रकार की औषधियाँ तथा और भी कई साधन उपलब्ध करवाते हैं। वनों के कारण ही प्राकृतिक संतुलन तथा पर्यावरण संतुलन बना रहता है। पेड़-पौधे ही पर्यावरण को प्रदूषण रहित रखते हैं। अत: वनों के सरंक्षण की अत्यधिक आवश्यकता है, लेकिन आज हमारे देश में स्वार्थी लोग अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए वनों को काट रहे हैं। हमारे देश में वनों की कटाई का सबसे बड़ा कारण हमारे देश की जनसंख्या का विस्फोट है। बढ़ती जनसंख्या के कारण आवास के लिए भूमि का अभाव हो रहा है तथा जनसंख्या की अधिकता के कारण अधिक रोज़गारों की आवश्यकता है। रोज़गारों में वृद्धि के लिए अधिक-से-अधिक उद्योग-धंधे स्थापित किए जा रहे हैं। इसी कारण वनों को काटकर, रहने के लिए आवास तथा उद्योगों के लिए बड़ी-बड़ी इमारतें बनाई जा रही हैं। यह सब होने के कारण ही हमारे देश में प्राकृतिक समस्याएँ , जैसे-सूखा, पर्वत-स्खलन, भूमि-कटाव आदि पैदा हो रहे हैं। मनुष्य के विनाश की शुरूआत हो रही है और मनुष्य इन नुकसानों को अनदेखा करके लगातार वनों की कटाई में लगा हुआ है। वनों की कटाई के कारण प्रदूषण इतना बढ़ गया है कि साँस लेना भी मुश्किल हो गया है। फैक्ट्रियों की चिमनी से निकलने वाले धुएँ प्रदूषण में बढ़ोत्तरी करते हैं। अत: लोगों को इस बात के प्रति जागरूक होना चाहिए कि वनों की अंधाधुंध कटाई पर रोक लगाई जाए। चूँकि ये गंभीर समस्या है, इसलिए सभी को मिलकर इस दिशा में सुधार के लिए कदम उठाने चाहिए।

उ.15 परीक्षा भवन,

दिल्ली।

दिनांक 25 जनवरी, 2024

सेवा में,

परिवहन सचिव महोदय,

दिल्ली सरकार

दिल्ली।

विषय : अपनी कॉलोनी तक नए बस मार्ग हेतु।

मान्यवर,

मैं उत्तर-पश्चिम दिल्ली के विकासपुरी, डी-ब्लॉक का निवासी हूँ। हमारे क्षेत्र में बड़ी जनसंख्या निवास करती है, जिसमें अधिकांश लोग दिल्ली के विभिन्न भागों में कार्यरत हैं। हमारी कॉलोनी से कोई बस नहीं चलती। इसके कारण लोगों को प्रत्येक दिन अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है तथा लगभग 2 किमी पैदल चलकर ए-ब्लॉक बस स्टैंड तक आना पड़ता है। इसमें समय की बर्बादी के साथ शारीरिक-मानसिक परेशानी भी होती है।

अत: आपसे अनुरोध है कि विकासपुरी डी-ब्लॉक तक एक नया बस मार्ग (बस रूट) आरंभ करने की कृपा करें। इसके लिए हम सब आपके आभारी रहेंगे। मुझे विश्वास है कि आप इसे गंभीरता से लेते हुए संबंधित अधिकारी को इसके लिए उचित निर्देश देंगे।

धन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

अथवा

परीक्षा भवन

मोदीनगर गाजियाबाद,

उत्तर प्रदेश।

दिनांक 25 जनवरी, 2024

सेवा में,

श्रीमान कृषि राज्य मंत्री महोदय,

उत्तर प्रदेश सरकार,

लखनऊ,

उत्तर प्रदेश।

विषय किसानों की समस्याओं के समाधानार्थ आवेदन पत्र।

मान्यवर,

आपको सूचित किया जाता है कि स्वतंत्रता के 70 वर्ष पश्चात् भी भारतीय किसान का जीवन अत्यंत दयनीय है। देश के अन्नदाता कहलाने वाले किसान के समक्ष अनके समस्याएँ हैं, जिनका उसे आए दिन सामना करना पड़ता रहता है। इसलिए कृषक अपने बच्चों को किसान नहीं बनाना चाहता है, क्योंकि कृषक को उसकी फसलों का उचित मूल्य नहीं मिल पाता। व्यापारी सस्ती दरों पर किसानों से खाद्यान्न, फल तथा सब्जियाँ आदि खरीदकर स्वयं अत्यधिक लाभ कमाते हैं। कृषि उपकरणों का अभाव, मानसून की पर्याप्त जानकारी का अभाव, महँगे बीज तथा खाद, मौसम की मार, पर्याप्त कीटनाशकों का अभाव आदि अनेक समस्याओं से ग्रस्त भारतीय किसान आए दिन आत्महत्या करने को विवश हैं।

अत: आपसे विनम्र निवेदन है कि आप सभी भारतीय किसानों की उपर्युक्त समस्याओं के समाधान के लिए कठोर तथा उपयुक्त कदम उठाएँ तथा विभिन्न कृषि नीतियों का उचित क्रियान्वयन कर भारतीय कृषकों के जीवन को समाप्त होने से बचाने का प्रयास करें। आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद

भवदीय

क.ख.ग.

उ.16 (i)

राजकीय माध्यमिक, विद्यालय, आदर्श नगर, दिल्ली

25 जनवरी, 2024 **सूचना**

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि विद्यालय के खेल के मैदान में एक बटुआ मिला है, जिसमें कुछ रूपयों के साथ जरूरी कार्ड भी है, जिसका भी यह हो वह अपना नाम, कक्षा तथा बटुए की पहचान, रूपए तथा कार्ड की संख्या बता कर प्रधानाचार्य के कक्ष से इसे वापस ले सकता है।

अभय चौधरी

(खेल अध्यापक)

अथवा

(ii)

बाल विकास पब्लिक स्कूल, दिल्ली

25 जनवरी, 2024 **सूचना**

'समय-प्रबंधन' विषय पर आयोजित होने वाली कार्यशाला हेतु

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि बाल विकास पब्लिक स्कूल की ओर से समय-प्रबंधन विषय पर 13 मार्च से 15 मार्च तक कार्यशाला आयोजित की जा रही है। यह कार्यशाला प्राप्त: 9 बजे से 10 बजे तक चलेगी। इच्छुक विद्यार्थी को 12 मार्च तक पंजीकरण कराना आवश्यक हैं। पंजीकरण शुल्क 10/- निर्धारित किया गया है।

सचिव

क.ख. ग

उ.17 (i) साबुन बनाने वाली एक कंपनी की ओर से अपने उत्पाद के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

'मैडिमिक्स' साबुन

जो रखे आपको
हमेशा तरोताजा...

तन को निखारे, आपका रूप सँवारे

विशेषताएँ

- कीटाणुओं से सुरक्षा
- मुलायम त्वचा
- जड़ी बूटियों से युक्त आयुर्वेदिक साबुन
- मनमोहक सुगंध युक्त

संपर्क करें : 888-102, जीवन-कुटी भवन, इलाहाबाद।

अथवा

(ii)

विश्व जल दिवस

"जल है जीवन का अनमोल रतन,
इसे बचाने का तुम करो जतन"

जल है, तो कल है

22 मार्च

उ.18

From (प्रेषक)	ABC@ gmail.com
To (प्राप्तकर्ता)	principal @gmail.com
Cc (प्रतिलिपि)	.....
Bcc (गोपनीय प्रतिलिपि)	.....
विषय :- अंग्रेज़ी शिक्षक की कमी के विषय में ई-पत्र।	
मान्यवर, मैं आपके विद्यालय की दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। विगत एक महीने से हमारे अंग्रेज़ी शिक्षक अवकाश पर हैं पता चला है कि वे अभी एक महीना और अवकाश पर रहेगें। शिक्षक न होने से हमें बहुत कठिनाई हो रही है। हमारा अंग्रेजी विषय का पाठ्यक्रम भी पूरा नहीं हुआ है। मार्च में हमारी बोर्ड की परीक्षा है। यदि शिक्षक न आए तो अंग्रेज़ी विषय में पास होना भी मुश्किल हो जाएगा। आपसे अनुरोध है कि शीघ्र ही अंग्रेजी शिक्षक की व्यवस्था कराई जाए, ताकि हम विषय की अच्छी तैयारी कर सकें। धन्यवाद। आपका आज्ञाकारी शिष्य अ.ब.स.	

अथवा

उक्ति का अर्थ ''लालच बुरी बला है'' अर्थात् मनुष्य लालच के वशीभूत होकर पथ भ्रष्ट हो जाता हैं। इस उक्ति को पढ़कर एक कथा स्मरण हो आती है, जो निम्न प्रकार हैं

कथा एक गाँव में एक सेठ रहता था। उसके बंगले के पास एक गरीब मोची की छोटी-सी दुकान थी। उस मोची की आदत थी कि वह, जब भी जूते सिलता भगवान का भजन करता था, लेकिन सेठ का भजन की तरफ कोई ध्यान नहीं था। एक दिन सेठ व्यापार के सिलसिले में विदेश गया। घर लौटते वक्त उसकी तबीयत बहुत खराब हो गई, लेकिन पैसे की कमी न होने से देश विदेश से डॉक्टरों को बुलाया गया, पर कोई भी सेठ की बीमारी का इलाज नहीं कर सका। अब सेठ की तबीयत इतनी अधिक खराब हो गई कि वह चल भी नहीं पाता था। एक दिन बिस्तर पर लेटे हुए उसे मोची के भजन गाने की आवाज सुनाई दी, उसे आज मोची के भजन अच्छे लग रहे थे। सेठ भजन सुनकर ऐसा मंत्र मुग्ध हो गया कि उसे लगा जैसे उसके साक्षात् परमात्मा के दर्शन हो गए। मोची का भजन सेठ को उसकी बीमारी से दूर ले जा रहा था। भगवान के भजन में लीन होकर वह अपनी बीमारी भूल गया और उसे आनंद की प्राप्ति हुई तथा उसके स्वास्थ्य में भी सुधार आने लगा। एक दिन सेठ ने मोची को बुलाकर ₹ 1000 का इनाम देते हुए कहा कि मेरी बीमारी का इलाज बड़े-से-बड़े डॉक्टर नहीं कर पाए, पर तुम्हारे भजन ने यह काम कर दिया मैं तुम्हें रहने के लिए एक घर भी दूँगा। मोची इनाम पाकर बहुत खुश हुआ, वह रात दिन पैसों के और घर के बारें में सोचता रहा। अगले दिन वह काम पर भी नहीं गया। लालच के कारण धीरे-धीरे उसकी दुकानदारी चौपट होने लगी, उधर सेठ की बीमारी फिर से बढ़ती जा रही थी। मोची को जब लालच का एहसास हुआ, तो वह सेठ को पैसे वापस करने के लिए सेठ के बंगले में आया। उसने सेठ से निवेदन किया कि आप यह पैसे वापस रख लीजिए, मुझे आपका घर भी नहीं चाहिए, क्योंकि इसके कारण मेरा धंधा चौपट हो गया हैं, मैं भजन भूल गया हूँ। इस धन ने मेरा परमात्मा से नाता तुड़वा दिया। मोची पैसे वापस करके पुनः अपने काम में जुट गया।

वस्तुतः पैसों और घर के लालच ने मोची को पथ भ्रष्ट कर दिया था। वह अपने काम को यहाँ तक कि परमात्मा को भी भूलकर पैसों और घर के लालच में ही डूब गया था। अंत में मोची जान गया था कि ''लालच बुरी बला है।''

सीख इस कथा से हमें यह सीख मिलती है कि हमें लालच नहीं करना चाहिए, क्योंकि लालच बुरी बला है।